

## प्रथमः पाठः

### मङ्गलम्

( उपसर्ग, अयादिसन्धि )

( भारत की प्राचीन परम्परा रही है कि मङ्गलाचरण से ही कोई महत्त्वपूर्ण कार्य आरम्भ होता है । कुछ विद्वानों ने तो कार्य के आदि, मध्य और अन्त में भी मङ्गल करने की बात कही है। मङ्गल के अन्तर्गत प्रायः आराध्य देवताओं या गुरुओं की वन्दना, प्रभुप्रार्थना अथवा कार्य की सफलता की शुभकामना होती है । प्रस्तुत पाठ में ऋग्वेद तथा उपनिषदों के मन्त्र मङ्गल के रूप में दिये गये हैं जिनमें सहयोग एवं गुरु-शिष्य के अभ्युदय की कामना की गई है।)



1. सगच्छध्व सवदध्व स वा मनास जानताम् ।

देवा भागं यथा पूर्वे सज्जानाना उपासते ॥ 1 ॥

2. सह नाववतु सह नौ भुनक्तु सह वीर्यं करवावहै ।

तेजस्वि नावधीतमस्तु मा विद्विषावहै ॥ 2 ॥

### शब्दार्थ :

|                      |   |                               |
|----------------------|---|-------------------------------|
| संगच्छध्वम्          | = | तुम लोग साथ चलो               |
| संवदध्वम्            | = | तुमलोग साथ बोलो               |
| वो ( वः )            | = | तुम्हारे                      |
| मनांसि               | = | मन ( बहुवचन )                 |
| सं जानताम्           | = | एक साथ चिन्तन करें            |
| देवाः                | = | श्रेष्ठ पुरुष                 |
| पूर्वे               | = | प्राचीन काल के                |
| भागम्                | = | अपने प्राप्य अंश को           |
| सञ्जानानाः           | = | समान चिन्तित वाले             |
| सह                   | = | साथ                           |
| नौ                   | = | हमदोनों                       |
| उपासते               | = | समीप रहते हैं, ग्रहण करते हैं |
| भुनक्तु              | = | भोजन करे, भोगे                |
| अधीतम्               | = | ज्ञान, पढ़ा हुआ विषय          |
| मा                   | = | नहीं                          |
| विद्विषावहै          | = | ( हमदोनों ) विद्वेष करें      |
| नाववतु ( नौ + अवतु ) | = | हमदोनों की रक्षा करें         |

### व्याकरणम्

### सन्धिविच्छेद :

नाववतु = नौ + अवतु

नावधीतमस्तु = नौ + अधीतम् + अस्तु

### अभ्यासः

#### मौखिकः

1. मन्त्रौ श्रावयत ।
2. स्वस्मरणेन कञ्चित् मङ्गलश्लोकं श्रावयत ।
3. उच्चैः गायत - (क) मङ्गलं भगवान् विष्णुः मङ्गलं गरुडध्वजः ।  
मङ्गलं पुण्डरीकाक्षः मङ्गलायतनो हरिः ॥

#### 4. रिक्तस्थानानि पूरयत

(क) ..... संवदध्वं मं ..... ज्ञानताम् । देवा भागं .....  
सज्जानाना ..... ॥

(ख) पावकः = पौ + अकः

नायकः = नै + .....

नयनम् = ..... + अनम्

नाविकः = ..... + .....

पवनः = ..... + .....

भवनम् = भो ..... +

#### 5. संस्कृते अनुवादं कुरुत -

Developed by:  www.absol.in

- (क) वह प्रतिदिन विद्यालय जाता है ।
- (ख) मेरे साथ तुम भी जाओगे ।
- (ग) सभी सुखी हो ।
- (घ) संसार ही परिवार है ।
- (ङ) दिल्ली भारत की राजधानी है ।

#### 6. वाक्यानि रचयत-

यथा - ऋतुराजः - वसन्तः ऋतुराजः कथ्यते ।

- (क) दृष्ट्वा .....
- (ख) महोत्सवः .....
- (ग) शनैः शनैः .....
- (घ) गच्छन्ति .....
- (ङ) वेदेषु .....

#### 7. उदाहरणानुसारं पदानि पृथक् कुरुत -

यथा - रात्रौषामेव - सर्वेषाम् + एव

- अधीतमस्तु - ..... + .....
- अध्ययनमेव - ..... + .....
- वर्षमस्ति - ..... + .....
- समुद्रमिव - ..... + .....

#### 8. भिन्नप्रकृतिकं पदं चिनुत -

- (क) सिंहः, कुक्कुरः, गर्दभः, भल्लूकः, शुकः
- (ख) जम्बुः, आम्रम्, नारिकेलम्, ओदनम्, अमृतफलम्
- (ग) रजकः, नापितः, लौहकारः, स्वर्णकारः, वस्त्रम्
- (घ) मस्तकम्, ग्रीवा, ओष्ठः, पौत्रः, कपोलः
- (ङ) दशाननः, सप्त, शतम्, विंशतिः, द्वादश

9. कोष्ठे दत्तानां लटरूपाणां लङ्रूपाणि ( एकवचने ) लिखत -

यथा - उज्ज्वलः पुस्तकं ( पठति ) - उज्ज्वलः पुस्तकम् अपठत् ।

- (क) शाम्भवी जलं ( पिबति ) -
- (ख) आलोकः उच्चैः ( हसति ) -
- (ग) इकबालः पत्रं ( लिखति ) -
- (घ) आफताबः कुत्र ( गच्छति ) ?
- (ङ) अनुष्का श्लोकं ( वदति ) -

10. भवान् / भवती विद्यालयस्य प्राङ्गणस्य चित्रे किं पश्यति ?

यथा -

1. अहं चित्रे एकं वृक्षं पश्यामि ।
2. .... ।
3. .... ।
4. .... ।
5. .... ।
6. .... ।

योग्यताविस्तारः

भारतवर्ष की धार्मिक परम्परा में ऐसा विश्वास रहा है कि किसी कार्य को आरम्भ

करते समय तथा उसके समापन के समय मङ्गलिक वचनों का उच्चारण किया जाये।  
वैयाकरण पतञ्जलि ने कहा है - **मङ्गलादीनि मङ्गलान्तानि शास्त्राणि प्रथन्ते ।**  
अर्थात् जिन शास्त्रों के आरम्भ और अन्त में मङ्गल कार्य होते हैं वे बहुत दूर तक और  
बहुत दिनों तक प्रचलित रहते हैं। इसलिए कार्य के स्थायित्व एवं लोकप्रिय होने के  
लिए आरम्भ में मङ्गलाचरण आवश्यक है । इसमें किसी देवता या आराध्य व्यक्ति  
की वन्दना की जाती है अथवा संसार के सुखी होने की कामना की जाती है। यद्यपि  
यह मङ्गल कार्य शास्त्रीय दृष्टि से प्रचलित हुआ था किन्तु आगे चलकर सभी कार्यों  
के लिए आवश्यक माना गया । तभी तो किसी भवन के निर्माण के पूर्व वास्तुपूजा,  
गृहप्रवेश में सत्यनारायण आदि की पूजा की जाती है । मध्यकाल में कार्य की निर्विघ्न  
समाप्ति के लिए मङ्गलाचरण आवश्यक माना गया ।

भौतिकवादी युग में भी किसी-न-किसी रूप में शिलान्यास, उद्घाटन इत्यादि के  
कार्य मङ्गल समझ कर ही किये जाते हैं। संस्कृत में भी कहा गया था कि ग्रन्थ में  
नमस्कार या आशीर्वाद की कामना न होने पर भी कथानक की केवल सूचना दे देना  
(वस्तुनिर्देश) भी मङ्गल का स्वरूप है । वस्तुतः मङ्गल इस आस्था पर आश्रित है  
कि हमारा कार्य विघ्न-बाधा के बिना पूरा हो जाए ।

प्रस्तुत पाठ में ऋग्वेद के अन्तिम सूक्त का एक मन्त्र है जिसमें सभी लोगों के  
मिलजुल कर रहने, समान हृदय, समान विचार तथा सामञ्जस्य की कामना है । एकता  
का सकेव इससे मिलता है । दूसरा मन्त्र कुछ उपनिषदों के मङ्गल पाठ के रूप में है  
जिसमें गुरु - शिष्य के बीच सौहार्द तथा विद्या के आदान-प्रदान की भास्वरता की  
सुन्दर कामना है ।

QQQ

Developed by:  www.absol.in

द्वितीयः पाठः

## सङ्घे शक्तिः

( कृदन्त-प्रयोग )

( आधुनिक युग की सबसे बड़ी समस्या लोगों में परस्पर अविश्वास, लोभ तथा महत्वाकांक्षा की है जिसके कारण परिवार, समाज इत्यादि संस्थाओं का बहुत तेजी से विघटन हो रहा है। लोग संघ की शक्ति की उपेक्षा करके व्यक्तिवाद को बढ़ावा दे रहे हैं। इससे परिवार, समाज तथा राष्ट्र तक की सत्ता सन्देह में पड़ गयी है। प्रस्तुत पाठ में एक प्रसिद्ध लोककथा के द्वारा संघ अर्थात् मिलजुल कर रहने की महत्ता पर प्रकाश डाला गया है। )



आस्त गङ्गायाः स्मरणाय तारं पुष्कलनामकां ग्रामः । तत्र बहुधनसम्पन्नः हरिहरो नाम कृषिकः । कृषिकर्मणा तेन प्रभूता सम्पत्तिरर्जिता । ग्रामे तत्परिसरे च तेन महती प्रतिष्ठा सम्प्राप्ता । तस्य चत्वारः पुत्राः अभवन् । पितुः कार्ये सहायतां नाकुर्वन्, प्रत्युत परस्परं नित्यं कलहायन्ते । एकः कथयति - त्वामेव पिता अधिकं मन्यते । त्वमेव तस्य विपुलां सम्पत्तिं प्राप्स्यसि । अपरः वदति - त्वम् अतीव अलसः । कदापि किमपि हितकरम् उपयोगि कार्यं न करोषि । तृतीयः तथैव विद्याध्ययनस्य निन्दां करोति, चतुर्थः विद्याध्ययनाय पितुः धनयाचनां करोति तदा तृतीयः पितरं वारयति । एवमेव किमपि



समाश्रित्य चतुर्षु भ्रातृषु कलहः प्रवर्तते स्म । अनेन बुद्धिमान् पिता सततं चिन्तितस्तिष्ठति ।



वृद्धः पिता स्वपुत्रान् कृषकमणः सञ्चालनाय भूया भूयः प्रेरयात् किन्तु सर्वेऽपि अलसाः न शृण्वन्ति । एकदा स वार्धक्यजनिनेन रोगेण ग्रस्तः शय्यासीनो जातः । स कलहायमानेषु पुत्रेषु सङ्घर्षद्वितायाः महत्त्वस्य बोधनाय उपायमचिन्तयत् । सर्वानपि पुत्रानाहूय स एकस्मै सुबद्धं दण्डचतुष्टयं दत्वा प्राह - त्वमेनं भञ्जय । स कथमपि भङ्क्तुं नाशक्नोत् । तदा अपरः पुत्रः तथैव आदिष्टः ।



साञ्जनं तस्य दण्डचतुष्टयं भङ्क्तुं न शक्नोति । तदा अपरः पुत्रः तथैव आदिष्टः ।



पुत्रयोरभवत् । तदा वृद्धः पिता दण्डचतुष्टयं निर्बध्य एकैकं दण्डम् एकैकस्मै पुत्राय दत्तवान् । किञ्च तं दण्डं त्रोटयितुं पुनः आदिष्टवान् । सर्वे पुत्राः स्व-स्व हस्तस्थं दण्डं भङ्क्तुं समर्थाः जाताः । तदा पिता कथितवान् - पुत्राः ! एवमेव बुध्यध्वम् । यदि यूयं पृथक्-पृथक् तिष्ठथ, तदा कश्चित् शत्रुः युष्मान् एकैकान् विनाशयिष्यति । यदि पुनः यूयं सर्वे मिलित्वा सुबद्धाः तिष्ठथ, तदा कोऽपि बाह्यजनः युष्मान् विनाशयितुं न समर्थः । अयमुपदेशः - संहतिः श्रेयसी पुंसाम् ।

तस्माद् दिवसात् प्रभृति सर्वेऽपि चत्वारः पुत्राः स्व-स्व दुष्टविचारान् त्यक्त्वा परस्परं मेलनेन गृहेऽवर्तन्त पितुश्च सेवया तम् अरोगं कृतवन्तः ।

#### शब्दार्थः

|               |   |                             |
|---------------|---|-----------------------------|
| रमणीये        | = | सुन्दर (सम्पत्तौ विभक्ति)   |
| ग्रामः        | = | गाँव                        |
| तत्र          | = | वहाँ                        |
| बहुधनसम्पन्नः | = | बहुत सम्पत्ति से युक्त, धनी |
| कृषिकः        | = | किसान                       |
| प्रभूता       | = | बहुत, पर्याप्त              |
| सम्पत्तिः     | = | धन                          |
| अर्जिता       | = | कमायी गयी                   |
| परिसरे        | = | प्रांगण में/ आस-पास         |
| महती          | = | बहुत, बड़ी                  |
| सम्प्राप्ता   | = | प्राप्त हुई                 |
| चत्वारः       | = | चार                         |

|             |   |              |
|-------------|---|--------------|
| अभवन्       | = | हुए          |
| अकुर्वन्    | = | किये         |
| प्रत्युत    | = | अपितु, बल्कि |
| परस्परम्    | = | आपस में      |
| कलहायन्ते   | = | लड़ते हैं    |
| अपरम्       | = | दूसरे को     |
| कथयति       | = | कहता है      |
| त्वाम्      | = | तुम्हें      |
| एव          | = | ही           |
| मन्यते      | = | मानता है     |
| विपुलाम्    | = | बहुत         |
| प्राप्स्यसि | = | प्राप्तोगे   |
| अतीव        | = | बहुत         |
| अलसः        | = | आलसी         |
| किमपि       | = | कुछ भी       |
| हितकरम्     | = | भला          |
| करोषि       | = | करते हो      |
| तथैव        | = | वैसे ही      |
| धनयाचनाम्   | = | धन की मांग   |

|                |   |                       |
|----------------|---|-----------------------|
| तदा            | = | तब                    |
| पितरम्         | = | पिता को               |
| वारयति         | = | रोकता है, मना करता है |
| एवम्           | = | इस प्रकार             |
| समाश्रित्य     | = | आश्रय लेकर            |
| कलहः           | = | लड़ाई                 |
| प्रवर्तते स्म  | = | होती थी               |
| सततम्          | = | लगातार                |
| तिष्ठति        | = | रहता है               |
| कृषिकर्मणः     | = | खेती के काम के        |
| सञ्चालनाय      | = | करने के लिए           |
| भूयो भूयः      | = | बार बार               |
| प्रेरयति       | = | प्रेरित करता है       |
| शृण्वन्ति      | = | सुनते हैं             |
| एकदा           | = | एक बार                |
| वार्धक्यजनितेन | = | बुढ़ापे से उत्पन्न    |
| शय्यासीनः      | = | बिछावन पर लेटा हुआ    |
| जातः           | = | हुआ                   |

|               |   |                                |
|---------------|---|--------------------------------|
| सङ्घबद्धतायाः | = | मिलकर रहने के                  |
| बोधनाय        | = | समझने के लिए                   |
| अचिन्तयत्     | = | सोचा, विचार किया               |
| आहूय          | = | बुलाकर                         |
| सुबद्धम्      | = | अच्छी तरह बंधा हुआ             |
| दण्डचतुष्टयम् | = | चार दण्डों को (दण्डम् = डण्डा) |
| दत्त्वा       | = | देकर                           |
| प्राह         | = | कहा                            |
| एनम्          | = | इसको, इसे                      |
| भञ्जय         | = | तोड़ो                          |
| भङ्क्तुम्     | = | तोड़ने के लिए / में            |
| नाशक्नोत्     | = | (न + अशक्नोत्) समर्थ नहीं हुआ  |
| तदा           | = | तब                             |
| आदिष्टः       | = | आदेश दिया गया                  |
| निर्बध्य      | = | बन्धनरहित करके, खोलकर          |
| एकैकम्        | = | एक-एक को                       |
| दत्तवान्      | = | दिया                           |
| त्रोटयितुम्   | = | तोड़ने के लिए                  |
| किञ्च         | = | तदनन्तर                        |

|              |   |                                  |
|--------------|---|----------------------------------|
| पुनः         | = | फिर                              |
| आदिष्टवान्   | = | आदेश दिया                        |
| हस्तस्थम्    | = | हाथ में स्थित, हाथ में रहने वाले |
| बुध्यध्वम्   | = | तुमलोग समझो                      |
| तिष्ठथ       | = | रहते हो                          |
| कश्चित्      | = | कोई                              |
| एकैकान्      | = | एक-एक को                         |
| विनाशयिष्यति | = | नष्ट कर देगा                     |
| मिलित्वा     | = | मिलकर                            |
| बाह्यजनः     | = | बाहरी मनुष्य                     |
| विनाशयितुम्  | = | नष्ट करने के लिए / में           |
| संहतिः       | = | एकता                             |
| श्रेयसी      | = | अधिक अच्छी                       |
| पुंसाम्      | = | मनुष्यों का/की/ के               |
| प्रभृति      | = | से लेकर, इत्यादि                 |
| सर्वे        | = | सभी                              |
| त्यक्त्वा    | = | छोड़कर                           |
| परस्परम्     | = | आपस में                          |
| मेलनेन       | = | मेल-मिलाप से                     |

अवर्तन्त = थे, रहते थे

अरोगम् = रोगरहित

कृतवन्तः = किये

### व्याकरणम्

#### सन्धिविच्छेदः पदविच्छेदश्च

सम्पत्तिरर्जिता = सम्पत्तिः + अर्जिता ( विसर्ग-सन्धिः )

त्वामेव = त्वाम् + एव

त्वमेव = त्वम् + एव

किमपि = किम् + अपि

कदापि = कदा + अपि ( दीर्घ - सन्धिः )

तथैव = तथा + एव ( वृद्धि - सन्धिः )

विद्याध्ययनस्य = विद्या + अध्ययनस्य ( दीर्घ-सन्धिः )

एवमेव = एवम् + एव

चिन्तितस्तिष्ठति = चिन्तितः + तिष्ठति ( विसर्ग-सन्धिः )

सर्वेऽपि = सर्वे + अपि ( पूर्वरूप-एकादेशः )

कथमपि = कथम् + अपि

सोऽपि = सः + अपि ( विसर्ग-सन्धिः )

इयमेव = इयम् + एव

अपरयोरपि = अपरयोः + अपि ( विसर्ग- सन्धिः )

|              |   |                                   |
|--------------|---|-----------------------------------|
| पुत्रयोरभवत् | = | पुत्रयोः + अभवत् (विसर्ग-सन्धिः)  |
| एकैकम्       | = | एक + एकम् (वृद्धि-सन्धिः)         |
| किञ्च        | = | किम् + च (व्यञ्जन-सन्धिः)         |
| कश्चित्      | = | कः + चित् (विसर्ग-सन्धिः)         |
| कोऽपि        | = | कः + अपि (विसर्ग-सन्धिः)          |
| अयमुपदेशः    | = | अयम् + उपदेशः                     |
| गृहेऽवर्तन्त | = | गृहे + अवर्तन्त (पूर्वरूप-सन्धिः) |
| पितुश्च      | = | पितुः + च (विसर्ग-सन्धिः)         |

### प्रकृति-प्रत्यय-विभागः

|             |   |                                                           |
|-------------|---|-----------------------------------------------------------|
| अर्जिता     | = | + क्त, स्त्रीलिङ्गम्, एकवचनम्                             |
| सम्प्राप्ता | = | सम् + प्र + $\sqrt{\text{अर्ज्}}$ + क्त, स्त्री०, एकवचनम् |
| कलहायन्ते   | = | कलह + क्यङ्, प्रथमपुरुषः, बहुवचनम्                        |
| अकुर्वन्    | = | $\sqrt{\text{आप्}}$ लट्लकारः, प्रथमपुरुषः, बहुवचनम्       |
| मन्यते      | = | लट्लकारः, प्रथमपुरुषः, एकवचनम्                            |
| प्राप्स्यसि | = | $\sqrt{\text{क्}}$ प्र लृट्लकारः, मध्यमपुरुषः, एकवचनम्    |
| जातः        | = | $\sqrt{\text{मन्}}$ + क्त                                 |
| समाश्रित्य  | = | $\sqrt{\text{आप्}}$ सम् + आ + श्रि + ल्यप्                |
| प्रवर्तते   | = | $\sqrt{\text{जन्}}$ प्र + लट्लकारः, प्रथमपुरुषः, एकवचनम्  |



|           |   |                                                                   |
|-----------|---|-------------------------------------------------------------------|
| तिष्ठति   | = | लट्लकारः, प्रथमपुरुषः, एकवचनम्                                    |
| प्रेरयति  | = | प्र + $\sqrt{\text{वृत्}}$ + णिच्, लट्लकारः, प्रथमपुरुषः, एकवचनम् |
| शृण्वन्ति | = | $\sqrt{\text{स्था}}$ लट्लकारः, प्रथमपुरुषः, बहुवचनम्              |
| अचिन्तयत् | = | $\sqrt{\text{इर}}$ णिच्, लङ्लकारः, प्रथमपुरुषः, एकवचनम्           |
| आहूय      | = | $\sqrt{\text{श्रु}}$ औ + ह्वे + ल्यप्                             |
| दत्त्वा   | = | $\sqrt{\text{चिन्त्}}$ + क्त्वा                                   |
| आदिष्टः   | = | आ + $\sqrt{\text{दिश्}}$ + क्त                                    |
| भज्जय     | = | $\sqrt{\text{दा}}$ भज्ज् लोट्लकारः, मध्यमपुरुषः, एकवचनम्          |
| अशक्नोत्  | = | $\sqrt{\text{लङ्लकारः}}$ , प्रथमपुरुषः, एकवचनम्                   |
|           |   | <b>अभ्यासः</b>                                                    |
|           |   | $\sqrt{\text{शक्}}$                                               |

### मौखिकः

#### 1. निम्नलिखितानां शब्दानाम् उच्चारणं कुरुत -

कृषिकर्मणा, सम्पत्तिरर्जिता, समाश्रित्य, चिन्तितस्तिष्ठति, शृण्वन्ति, दण्डचतुष्टयम्, एकैकस्मै, सर्वेऽपि, गृहेऽवर्तन्त ।

#### 2. 'सङ्घे शक्तिः भवति' - इति विषयम् आश्रित्य संस्कृतभाषायां द्वे वाक्ये वदत ।

#### 3. निम्नलिखितानां शब्दानाम् अर्थं वदत -

तथैव, विपुलाम्, कदापि, एवमेव, सततम्, एकदा, कथमपि, तदा, किञ्च ।

### लिखितः

#### 4. वाक्यनिर्माणं कुरुत -

पितरम्, ग्रामः, कृषिकः, करोषि, एकदा, पिता, त्यक्त्वा ।

**5. सन्धिविच्छेदं कुरुत -**

तथैव, चिन्तितस्तिष्ठति, सर्वेऽपि, सोऽपि, सम्पत्तिरर्जिता ।

**6. मञ्जूषातः शब्दं चित्वा रिक्तस्थानानि पूरयत -**

संहतिः, गङ्गायाः, चत्वारः, ग्रामे, शृण्वन्ति, कृषिकः

(क) अस्ति ..... तीरे पुष्कलनामको ग्रामः ।

(ख) तत्र बहुधनसम्पन्नः हरिहरो नाम ..... ।

(ग) ..... तेन महती प्रतिष्ठा सम्प्राप्ता ।

(घ) तस्य ..... पुत्राः अभवन् ।

(ङ) सर्वेऽपि अलसाः न ..... ।

(च) ..... श्रेयसी पुंसाम् ।

**7. प्रकृति-प्रत्यय-विभागं कुरुत -**

दत्त्वा, जातः, समाश्रित्य, आहूय, आदिष्टः ।

**8. अधोलिखितानां प्रश्नानाम् उत्तरं पूर्णवाक्येन लिखत -**

(क) पुष्कलनामको ग्रामः कुत्र अस्ति ?

(ख) कृषिकर्मणा केन प्रभूता सम्पत्तिरर्जिता ?

(ग) हरिहरस्य कति पुत्राः आसन् ?

(घ) के अति अलसाः आसन् ?

(ङ) सर्वे पुत्राः सेवया कम् अरोगं कृतवन्तः ?

**9. सुमेलनं कुरुत -**

अ

आ

|                 |     |                      |
|-----------------|-----|----------------------|
| (क) दत्त्वा     | (1) | + क्त                |
| (ख) ग्रस्तः     | (2) | आ + क्त              |
| (ग) त्रोटयितुम् | (3) | √ग्रस् + तुमुन्      |
| (घ) भङ्क्तुम्   | (4) | √ग्रस् + क्त्वा      |
| (ङ) मिलित्वा    | (5) | √दिश + णिच् + तुमुन् |
| (च) आदिष्टः     | (6) | √भञ्ज् + क्त्वा      |

#### 10. उदाहरणानुसारम् अव्ययपदानि चिनुत -

यथा - सः अद्य पाटलिपुत्रं गच्छति -  $\sqrt{\text{बुद्}}$  अद्य  
 $\sqrt{\text{दा}}$

- (क) त्वम् अत्र किं करोषि ? - ..... ।  
 (ख) सः कदा गृहं गमिष्यति ? - ..... ।  
 (ग) शीला करीना वा चित्रं द्रक्ष्यति? - ..... ।  
 (घ) असत्यं मा वद । ..... ।  
 (ङ) शकीलेन साकं सः अगच्छत् । ..... ।

#### 11. अधोलिखितानां निर्देशानुसारं रूपाणि लिखत -

यथा - मातृ (द्वितीया - एकवचने) - मातरम् ।

- (क) पुत्र (सप्तमी - एकवचने) - ..... ।  
 (ख) फल (षष्ठी - बहुवचने) - ..... ।  
 (ग) नदी (चतुर्थी - द्विवचने) - ..... ।  
 (घ) लता (सप्तमी - बहुवचने) - ..... ।  
 (ङ) युष्मद् (पञ्चमी - द्विवचने) - ..... ।

## 12. अधोलिखित-वाक्यानि घटनाक्रमानुसारं लिखत -

- (क) तत्र हरिहरो नाम कृषिकः वर्तते ।
- (ख) एकदा हरिहरः रोगग्रस्तः अभवत् ।
- (ग) गङ्गायाः तीरे पुष्कलनामको ग्रामः अस्ति ।
- (घ) हरिहरस्य चत्वारः पुत्राः आसन् ।
- (ङ) सर्वे पुत्राः अतीव अलसाः आसन् ।
- (च) हरिहरः पुत्रान् आहूय अवदत् ।
- (छ) सर्वे पुत्राः दुष्टविचारान् अत्यजन् ।

## 13. मञ्जूषायाः उचितानि पदानि योजयित्वा वाक्यनिर्माणं कुरुत -

|       |       |          |
|-------|-------|----------|
| सः    |       | गच्छतः   |
| त्वम् |       | गच्छामि  |
| अहम्  |       | गच्छन्ति |
| ते    |       | गच्छसि   |
| वयम्  | गृहम् | गच्छामः  |
| यूयम् |       | गच्छथ    |
| तौ    |       | गच्छति   |
| आवाम् |       | गच्छावः  |

### योग्यताविस्तार

समाज के इतिहास में दो प्रकार की धारणाएँ सदा से रही हैं- व्यक्तिवाद तथा समाजवाद। इसे प्राचीन संस्कृत साहित्य में स्वहित और परहित (परोपकार) के रूप में

वर्णित किया गया है। व्यक्तिवाद अर्थात् केवल स्वहित स्वाभाविक मनोवृत्ति है। सभी लोग अपने हित को सबसे बढ़कर मानते हैं किन्तु ऐसी मनोवृत्ति अन्ततः सामाजिक प्रक्रिया के विकास में हानिकारक होती है। इसीलिए परोपकार या परहित की कामना पर संस्कृत के प्राचीन लेखक बहुत मुखर रहे हैं। पुराणों के विषय में यह श्लोक कहा गया है -

अष्टादशपुराणेषु व्यासस्य वचनद्वयम् ।

परोपकारः पुण्याय पापाय परपीडनम् ॥

अर्थात् सभी पुराणों का यही सार है कि परोपकार व्यक्ति का आत्यन्तिक हित करता है और दूसरों को कष्ट देना बहुत बड़ा अपराध है। इसी प्रकार एक अन्य श्लोक है-

सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामयाः ।

सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चिद् दुःखभाग् भवेत् ।

ये सारे वचन स्वहित के परित्याग एवं परहित की भद्रकामना के अन्तर्गत संघबद्धता की दिशा में व्यक्ति को प्रेरित करते हैं। आदिम युग में व्यक्तिवाद चलता हो किन्तु सभ्य सुसंस्कृत समाज परस्पर सहयोग के बिना नहीं चल सकता। संघ से ही परिवार, समाज, राज्य - ये सारी संस्थाएँ चलती हैं। पञ्चतन्त्र में कहा गया है -

असंहताः विनश्यन्ति, संहतिः कार्यसाधिका ।

अर्थात् जो लोग बिखर कर रहते हैं वे नष्ट हो जाते हैं (Degeneration destroys)। दूसरी ओर संघबद्ध होने से अर्थात् मिलजुल कर कार्य करने से कार्य की सिद्धि होती है। वैदिक साहित्य से लेकर आधुनिक युग तक के संस्कृत लेखक संघ की शक्ति को रेखाङ्कित करते रहे हैं।

विगत एक सौ वर्षों से पाश्चात्य जगत् में समाजवाद (Socialism) की

अवधारणा बहुत महत्वपूर्ण हो गयी है। इसमें व्यक्ति को समाज का अविभाज्य अङ्ग माना गया है। एक व्यक्ति को समाज वह सब-कुछ प्रदान करे जो उसके जीवन-यापन के लिए आवश्यक है किन्तु उस व्यक्ति से भी समाज यह आशा करता है कि वह अपनी शक्तिभर समाज के लिए शारीरिक या बौद्धिक श्रम करे जिससे समाज की उन्नति हो (From each according to his capacity, to each according to his needs)। यही अवधारणा प्राचीन भारत की आश्रमव्यवस्था में भी थी जिसमें अवस्था के अनुरूप व्यक्ति स्वहित और परहित दोनों के लिए श्रम करता था। सम्यक् श्रम को ही “आश्रम” कहा गया था।

QQQ

तृतीयः पाठः

## अस्माकं देशः

( भूतकाल की क्रियाएँ )

(हमारा देश भारत अपनी सभ्यता और संस्कृति के कारण एक ओर संसार में अपनी प्राचीनता का गौरव धारण करता है तो दूसरी ओर अत्याधुनिक विकसित देशों के साथ चलते हुए अपने आधुनिक गौरव से भी सम्पन्न है। किसी समय इस देश की सीमाएँ पूर्व-पश्चिम में बहुत बड़े क्षेत्र को व्याप्त करती थी, भले ही आन्तरिक राज्यों की उपस्थिति यदा-कदा संघर्षात्मक भी होती थी, किन्तु आज यह उपमहादेश कई खण्डों में विभक्त हो चुका है। भारतवर्ष के नाम से अवशिष्ट देश अत्यधिक सम्पन्न एवं महत्वपूर्ण है। इस पाठ में देश के प्राचीन और आधुनिक दोनों रूपों का यथार्थ निरूपण है।)



उत्तरं यत् समुद्रस्य हिमाद्रेश्चैव दक्षिणम् ।

### वर्षं तद् भारतं प्राहुः भारती यत्र सन्ततिः ॥

अस्माकं देशः भारतवर्षमिति कथ्यते । प्राचीनकालात् अस्य देशस्य प्राकृतिकी समृद्धिः, साहित्यिकं योगदानं, सांस्कृतिकं वैभवं च आश्चर्यकराणि बभूव । अत्रैव वेदानाम् आविर्भावः सप्तसिन्धुप्रदेशे जातः, यत्र भौतिकम् आध्यात्मिकं च चिन्तनम् अद्भुतम् आसीत् । उत्तरभारते महाकाव्यानां पुराणानां शास्त्राणां च व्यापकता दक्षिणदेशभागमपि स्वप्रकाशे आनयत् । तत्रापि शिलप्पदिकारम् - प्रभृतयः ग्रन्थाः प्राचीनकालतः एव तमिलसाहित्यस्य गौरवं वर्धितवन्तः । सम्पूर्णस्य भारतस्य सांस्कृतिके एकत्वे पुराणानां योगदानम् अविस्मरणीयम् । इदानीं भारतस्य जने-जने धर्मस्थलानां तीर्थयात्रार्थं योऽभिनिवेशः दृश्यते स नूनं पुराणसाहित्यकृतम् । दक्षिणस्य निवासी बदरीकेदारयात्रां करोति, उत्तरस्य निवासी रामेश्वरं कन्याकुमारीतीर्थं च गन्तुमिच्छति । एवमेव द्वारिकाकामाख्यादिषु स्थलेषु गच्छन्ति तीर्थयात्रिकाः ।

अस्य देशस्य नद्यः पुण्यतोयाः मन्यन्ते, पर्वताः पावनाः कथ्यन्ते, वृक्षाः पूज्यन्ते । प्रकृतिं प्रति भारतीयानाम् आश्चर्यकरम् आकर्षणमासीत् । पूजनीयत्वात् प्रकृतेः प्रदूषणं पापं मन्यते स्म । अतएव पर्यावरणस्य कापि समस्या अत्र नासीत् ।

अस्मिन् देशे विज्ञानस्यापि महती प्रतिष्ठा आसीत् । वास्तुशिल्पिनः विशालानि मन्दिराणि निर्मान्ति स्म । भवनानि भव्यानि क्रियन्ते स्म । आकाशपिण्डानि ज्योतिर्विद्भिः अधीयन्ते स्म । अत्र चिकित्साशास्त्रमपि प्रगतिशीलम् । गणितशास्त्रे शून्यस्य कल्पना भारतेन कृता येन दशमलव-गणना प्रारभत, अन्यदेशेष्वपि गता ।

भारतस्य प्राचीनगौरवं मध्यकाले किञ्चित् तिरोहितं पराधीनतया किन्तु सम्प्रति शिक्षिताः सन्तः जनाः आधुनिके विज्ञानेऽपि प्रतिभां दर्शयन्ति । सी. वी. रमण-जगदीशचन्द्र बसु - मेघनाथसाहा - होमी जहांगीर भाभा - विक्रम साराभाई प्रभृतयः वैज्ञानिकाः आधुनिकभारतस्य गौरववर्धकाः । एवं महात्मा-गाँधीसदृशः कर्मवीरः,



रवीन्द्रनाथठाकुरसदृशः साहित्यकारः, अरविन्दसदृशः दार्शनिकः, राधाकृष्णन्सदृशः शिक्षकः, राजेन्द्रप्रसादसदृशः स्थितप्रज्ञः इत्यादयः वर्तमानभारतस्य गौरवरूपाः नेतारः सन्ति ।

सम्प्रति देशस्य विकासः सार्वत्रिकः वर्तते । कृषिक्षेत्रे नवीनाः प्रयोगाः, संचारसाधनानि उत्कृष्टानि अन्तरिक्षक्षेत्रेऽपि विशिष्टं योगदानं स्वास्थ्यं प्रति जनजागरणं, चिकित्सासुविधानां वृद्धिः, सर्वशिक्षाभियानम् इत्यादीनि उल्लेखनीयानि सन्ति। सर्वथापि देशः संसारस्य अग्रगण्येषु गणनीयो वर्तते ।

### शब्दार्थः

|           |   |                     |
|-----------|---|---------------------|
| उत्तरम्   | = | उत्तर दिशा में      |
| यत्       | = | जो                  |
| समुद्रस्य | = | समुद्र का / के / की |
| हिमाद्रेः | = | हिमालय के           |
| दक्षिणम्  | = | दक्षिण दिशा में     |
| वर्षम्    | = | देश, वर्ष, वृष्टि   |
| भारतम्    | = | भारत (नामक देश)     |
| प्राहुः   | = | कहते हैं            |
| भारती     | = | भारतीय              |
| यत्र      | = | जहाँ                |
| संततिः    | = | संतान               |
| अस्माकम्  | = | हमारा, हमलोगों का   |

|                    |   |                                                                                                           |
|--------------------|---|-----------------------------------------------------------------------------------------------------------|
| इति                | = | ऐसा                                                                                                       |
| कथ्यते             | = | कहा जाता है                                                                                               |
| प्राचीनकालात्      | = | प्राचीन काल से                                                                                            |
| अस्य               | = | इसका                                                                                                      |
| प्राकृतिकी         | = | प्राकृतिक                                                                                                 |
| समृद्धिः           | = | सम्पन्नता                                                                                                 |
| साहित्यिकम्        | = | साहित्य-संबन्धी                                                                                           |
| सांस्कृतिकम्       | = | सांस्कृतिक, संस्कृति से सम्बन्धित                                                                         |
| वैभवम्             | = | समृद्धि, सम्पन्नता                                                                                        |
| आश्चर्यकरम्        | = | आश्चर्य उत्पन्न करने वाला                                                                                 |
| बभूव               | = | था / हुआ                                                                                                  |
| अत्रैव (अत्र + एव) | = | यहीं                                                                                                      |
| वेदानाम्           | = | वेदों का                                                                                                  |
| आविर्भावः          | = | जन्म, उत्पत्ति                                                                                            |
| सप्तसिन्धुप्रदेशे  | = | सप्तसैन्धव क्षेत्र में (सिन्धु, झेलम, चेनाब, रावी, व्यास, सतलज व घग्घर (सरस्वती) सात नदियों वाला क्षेत्र) |
| जातः               | = | हुआ                                                                                                       |

|                            |   |                                            |
|----------------------------|---|--------------------------------------------|
| भौतिकम्                    | = | भौतिक, सांसारिक                            |
| आध्यात्मिकम्               | = | आध्यात्मिक (आत्मा से सम्बन्धित)            |
| चिन्तनम्                   | = | चिन्तन, मनन                                |
| अद्भुतम्                   | = | अद्भुत (जो आज से पहले न देखा गया हो)       |
| उत्तरभारते                 | = | उत्तर भारत में                             |
| महाकाव्यानाम्              | = | महाकाव्यों का                              |
| पुराणानाम्                 | = | पुराणों का                                 |
| शास्त्राणाम्               | = | शास्त्रों का                               |
| व्यापकता                   | = | विस्तार                                    |
| दक्षिणम्                   | = | दक्षिण को                                  |
| देशभागमपि (देशभागम् + अपि) | = | देश के भाग को भी                           |
| स्वप्रकाशे                 | = | अपने प्रकाश में                            |
| आनयत्                      | = | लाया                                       |
| तत्रापि (तत्र + अपि)       | = | वहीं                                       |
| शिल्पदिकारम्               | = | शिल्पदिकारम् (तमिल साहित्य का एक महाकाव्य) |
| प्रभृतयः                   | = | इत्यादि                                    |
| प्राचीनकालतः               | = | प्राचीन काल से                             |

Developed by:  [www.absol.in](http://www.absol.in)

|                              |   |                                  |
|------------------------------|---|----------------------------------|
| तमिलसाहित्यस्य               | = | तमिल साहित्य का                  |
| गौरवम्                       | = | गौरव को                          |
| वर्धितवन्तः                  | = | बढ़ाये हुए हैं                   |
| सम्पूर्णस्य                  | = | सम्पूर्ण का, समस्त का            |
| भारतस्य                      | = | भारत का                          |
| सांस्कृतिके                  | = | सांस्कृतिक में                   |
| एकत्वे                       | = | एकता में                         |
| अविस्मरणीयम्                 | = | नहीं भुलाये जाने योग्य (है)      |
| इदानीम्                      | = | इस समय                           |
| जने-जने                      | = | जन-जन में, लोगों में             |
| धर्मस्थलानाम्                | = | धर्म स्थलों का / की / के         |
| तीर्थयात्रार्थम्             | = | तीर्थ यात्रा के लिए              |
| योऽभिनिवेशः (यः + अभिनिवेशः) | = | जो लगाव, अभिरुचि                 |
| दृश्यते                      | = | देखा जाता है                     |
| नूनम्                        | = | निश्चित रूप से                   |
| पुराणसाहित्यकृतम्            | = | पुराण-साहित्य के द्वारा किया गया |
| दक्षिणस्य निवासी             | = | दक्षिण (भारत) के रहनेवाले        |

बदरीकेदारयात्राम् = बद्री(नाथ) और केदार(नाथ) की यात्रा (को)

उत्तरस्य = उत्तर का

रामेश्वरं कन्याकुमारी तीर्थं च = रामेश्वर और कन्याकुमारी तीर्थ (को)

गन्तुमिच्छति (गन्तुम् + इच्छति) = जाना चाहता है

एवमेव (एवम् + एव) = उसी प्रकार

द्वारिकाकामाख्यादिषु = द्वारिका, कामाख्या आदि में

स्थलेषु = स्थलों में / पर

तीर्थयात्रिकाः = तीर्थयात्री

नद्यः = नदियाँ

पुण्यतोयाः = पवित्र जलवाली

मन्यन्ते = माने जाते हैं, मानी जाती हैं

पावनाः = पवित्र करने वाले

कथ्यन्ते = कहे जाते हैं

पूज्यन्ते = पूजे जाते हैं

प्रकृतिं प्रति = प्रकृति के प्रति

भारतीयानाम् = भारतीयों का

आकर्षणमासीत् (आकर्षणम्+आसीत्) = आकर्षण था

|                                  |   |                                                   |
|----------------------------------|---|---------------------------------------------------|
| पूजनीयत्वात्                     | = | पूज्य होने (के कारण) से                           |
| प्रकृतेः                         | = | प्रकृति का                                        |
| प्रदूषणम्                        | = | प्रदूषण                                           |
| मन्यते स्म                       | = | माना जाता था                                      |
| अतएव                             | = | इसीलिए                                            |
| पर्यावरणस्य                      | = | पर्यावरण की                                       |
| कापि                             | = | कोई भी                                            |
| अत्र                             | = | यहाँ                                              |
| नासीत् (न + आसीत्)               | = | नहीं था                                           |
| अस्मिन् देशे                     | = | इस देश में                                        |
| विज्ञानस्यापि (विज्ञानस्य + अपि) | = | विज्ञान का भी                                     |
| महती                             | = | बड़ी                                              |
| प्रतिष्ठा                        | = | इज्जत, सम्मान                                     |
| वास्तुशिल्पिनः                   | = | वास्तुकार - शिल्पकार ( भवन<br>का नक्शा बनानेवाले) |
| विशालानि मन्दिराणि               | = | बड़े मन्दिरों को                                  |

|                                              |   |                                              |
|----------------------------------------------|---|----------------------------------------------|
| निर्मान्ति स्म                               | = | बनाते थे                                     |
| भवनानि                                       | = | भवन, मकान                                    |
| भव्यानि                                      | = | भव्य, सुन्दर, आकर्षक                         |
| क्रियन्ते स्म                                | = | बनाये जाते थे                                |
| आकाशपिण्डानि                                 | = | आकाशीय पिण्डों (ग्रह, उपग्रह, नक्षत्रादि) को |
| ज्योतिर्विद्भिः                              | = | ज्योतिषियों के द्वारा                        |
| अधीयन्ते स्म                                 | = | अध्ययन किये जाते थे                          |
| चिकित्साशास्त्रमपि (चिकित्साशास्त्रम् + अपि) | = | चिकित्सा शास्त्र भी                          |
| प्रगतिशीलम्                                  | = | प्रगतिशील, लगातार आगे बढ़नेवाला              |
| गणितशास्त्रे                                 | = | गणितशास्त्र में                              |
| शून्यस्य                                     | = | शून्य की, (का, के)                           |
| भारतेन                                       | = | भारत के द्वारा                               |
| कृता                                         | = | किया गया                                     |
| येन                                          | = | जिससे                                        |
| दशमलवगणना                                    | = | दशमलव की गणना (गिनती)                        |
| प्रारभत                                      | = | आरम्भ हुआ                                    |
| अन्यदेशेष्वपि (अन्यदेशेषु + अपि)             | = | दूसरे देशों में भी                           |

|                              |                                                                       |
|------------------------------|-----------------------------------------------------------------------|
| गता                          | = गयी                                                                 |
| किञ्चित्                     | = कुछ                                                                 |
| तिरोहितम्                    | = लुप्त, गायब                                                         |
| पराधीनतया                    | = पराधीनता से, गुलामी से, दूसरे के अधीन रहने से                       |
| सम्प्रति                     | = इस समय                                                              |
| शिक्षिताः                    | = शिक्षित, पढ़े-लिखे लोग                                              |
| सन्तः                        | = होते हुए                                                            |
| आधुनिके                      | = आधुनिक में, आज के समय में                                           |
| विज्ञानेऽपि (विज्ञाने + अपि) | = विज्ञान में भी                                                      |
| प्रतिभाम्                    | = प्रतिभा को                                                          |
| दर्शयन्ति                    | = दिखाते हैं                                                          |
| आधुनिकभारतस्य                | = आधुनिक भारत के                                                      |
| गौरववर्धकाः                  | = गौरव, प्रतिष्ठा, सम्मान बढ़ानेवाले                                  |
| सदृशः                        | = (के) समान                                                           |
| स्थितप्रज्ञः                 | = जिसने आत्मतत्त्व को जान कर स्थिरता प्राप्त कर ली है<br>(समसुखदुःखः) |
| इत्यादयः                     | = इत्यादि                                                             |
| वर्तमानभारतस्य               | = वर्तमान भारत के                                                     |



|                                                |                                                                     |
|------------------------------------------------|---------------------------------------------------------------------|
| गौरवरूपाः                                      | = गौरवरूप, प्रतिष्ठा देने वाले                                      |
| नेतारः                                         | = नेता (बहुवचन)                                                     |
| सार्वत्रिकः                                    | = सर्वत्र मिलने वाला                                                |
| कृषिक्षेत्रे                                   | = कृषि क्षेत्र में                                                  |
| नवीनाः प्रयोगाः                                | = नये प्रयोग                                                        |
| संचारसाधनानि                                   | = संचार के साधन (यथा- दूरभाष, वायुयान इत्यादि)                      |
| उत्कृष्टानि                                    | = उत्तम                                                             |
| अन्तरिक्षक्षेत्रेऽपि (अन्तरिक्षक्षेत्रे + अपि) | = अन्तरिक्ष क्षेत्र में भी                                          |
| विशिष्टम्                                      | = विशेष                                                             |
| स्वास्थ्यं प्रति                               | = स्वास्थ्य के प्रति                                                |
| जनजागरणम्                                      | = जन-जागरूकता                                                       |
| चिकित्सासुविधानां                              | = चिकित्सा सुविधाओं की                                              |
| वृद्धिः                                        | = बढ़ोत्तरी                                                         |
| सर्वशिक्षाभियानम्                              | = विद्यालयी शिक्षा के क्षेत्र में उत्थान के लिए चलाया गया कार्यक्रम |
| इत्यादीनि                                      | = इत्यादि                                                           |
| उल्लेखनीयानि                                   | = उल्लेखनीय                                                         |
| सर्वथापि (सर्वथा + अपि)                        | = सभी प्रकार से                                                     |

अग्रगण्येषु = अग्रगण्यों में

गणनीयः = गणना-योग्य

### व्याकरणम्

#### सन्धि-विच्छेदः

हिमाद्रेश्चैव = हिमाद्रेः + च + एव ( विसर्गसन्धिः, वृद्धिसन्धिः)

अत्रैव = अत्र + एव ( वृद्धिसन्धिः)

योऽभिनिवेशः = यः + अभिनिवेशः

नासीत् = न + आसीत् ( दीर्घसन्धिः)

अन्यदेशेष्वपि = अन्यदेशेषु + अपि ( यण्-सन्धिः)

विज्ञानेऽपि = विज्ञाने + अपि ( पूर्वरूप-सन्धिः)

अन्तरिक्षक्षेत्रेऽपि = अन्तरिक्षक्षेत्रे + अपि ( पूर्वरूप-सन्धिः)

सर्वथापि = सर्वथा + अपि ( दीर्घ-सन्धिः)

#### प्रकृति-प्रत्यय-विभागः

प्राहुः = प्र + लट्लकारः, प्रथमपुरुषः, बहुवचनम्

कथ्यते = + यक् ( कर्मवाच्यम् ), प्रथमपुरुषः, एकवचनम्

बभूव =  $\sqrt{\text{ब्रू}}$  लिट्लकार ( परोक्षभूत ), प्रथमपुरुषः, एकवचनम्

जातः =  $\sqrt{\text{कथ्}}$   $\sqrt{\text{भू}}$  जन् + क्त, पुँ०, एकवचनम्

|               |   |                |                                                    |
|---------------|---|----------------|----------------------------------------------------|
| चिन्तनम्      | = | √              | + ल्युट्                                           |
| आसीत्         | = | √              | लङ्लकारः, प्रथमपुरुषः, एकवचनम्                     |
| व्यापकता      | = | वि + √चिन्त    | + ण्वुल् + तल् (ता)                                |
| आनयत्         | = | आ + √अस्       | लङ्लकारः, प्रथमपुरुषः, एकवचनम्                     |
| प्राचीनकालतः  | = | प्राचीन + √आप् | तसिल् (तः)                                         |
| वर्धितवन्तः   | = | + √कृ          | णिच्, क्तवतु, बहुवचनम्                             |
| विस्मरणीयम्   | = | वि +           | + अनीयर्, नपुंसकलिङ्गम्                            |
| न विस्मरणीयम् | = | अ + √वृध्      | विस्मरणीयम् (नञ् समास)                             |
| दृश्यते       | = | + यक् + √स्मृ  | (य), प्रथमपुरुषः, एकवचनम् (कर्मवाच्यम्)            |
| कृतम्         | = | + क्त          | , नपुंसकलिङ्गम्, एकवचनम्                           |
| करोति         | = | √दृश्          | लट्लकारः, प्रथमपुरुषः, एकवचनम्                     |
| गन्तुम्       | = | √कृ            | + तुमुन्                                           |
| इच्छति        | = | √कृ            | लट्लकारः, प्रथमपुरुषः, एकवचनम्                     |
| गच्छन्ति      | = | √गम्           | लट्लकारः, प्रथमपुरुषः, बहुवचनम्                    |
| मन्यन्ते      | = | √इष् + यक्     | (य), लट्लकारः, प्रथमपुरुषः, बहुवचनम् (कर्मवाच्यम्) |
| कथ्यन्ते      | = | √गम् + यक्     | , लट्लकारः, प्रथमपुरुषः, बहुवचनम् (कर्मवाच्यम्)    |
| पूज्यन्ते     | = | √मन् + यक्     | , लट्लकारः, प्रथमपुरुषः, बहुवचनम् (कर्मवाच्यम्)    |
|               | = | √कथ्           |                                                    |

|            |                                                                                 |
|------------|---------------------------------------------------------------------------------|
| निर्मान्ति | = निर् + लट्लकारः, प्रथमपुरुषः, बहुवचनम्                                        |
| क्रियन्ते  | = $\sqrt{\text{पूज}}$ + यक्, लट्लकारः, प्रथमपुरुषः, बहुवचनम् (कर्मवाच्यम्)      |
| अधीयन्ते   | = अधि + $\sqrt{\text{मा}}$ + यक्, लट्लकारः, प्रथमपुरुषः, बहुवचनम् (कर्मवाच्यम्) |
| प्रारभत    | = प्र + आ + लङ्लकारः, प्रथमपुरुषः, एकवचनम्                                      |
| गता        | = $\sqrt{\text{ग}}$ , स्त्रीलिङ्गम्, एकवचनम्                                    |
| दर्शयन्ति  | = + णिच्, लट्लकारः, प्रथमपुरुषः, बहुवचनम्                                       |
| वर्तते     | = $\sqrt{\text{गम्}}$ लट्लकारः, प्रथमपुरुषः, एकवचनम् (आत्मनेपदी)                |

मौखिक :  $\sqrt{\text{दृश्}}$

### 1. अधोलिखितानां पदानाम् उच्चारणं कुरुत -

हिमाद्रेश्च, प्राहुः, साहित्यिकम्, आविर्भावः, शिल्पदिकारम् अविस्मरणीयम्, योऽभिनिवेशः, द्वारिकाकामाख्यादिषु, पुण्यतोयाः, वास्तुशिल्पिनः, ज्योतिर्विद्भिः, चिकित्साशास्त्रम्, अन्तरिक्षक्षेत्रेऽपि, अग्रगण्येषु ।

### 2. निम्नलिखितानां पदानाम् अर्थं वदत -

अस्माकम्, प्राचीनकालात्, समृद्धिः, वेदानाम्, आध्यात्मिकम्, वर्धितवन्तः, अविस्मरणीयम्, इदानीम्, अभिनिवेशः, गन्तुमिच्छति, पुण्यतोयाः, मन्यन्ते, पूजनीयत्वात्, प्रदूषणम्, आकाशपिण्डानि, ज्योतिर्विद्भिः, अन्यदेशेष्वपि, तिरोहितम्, स्थितप्रज्ञः, सार्वत्रिकः, संचारसाधनानि, जनजागरणम्, सर्वशिक्षाभियानम्, सर्वथापि, गणनीयः ।

### 3. भारतवर्षस्य विषये दश वाक्यानि स्वमातृभाषायां वदत ।

लिखितः

#### 4. अधोलिखितानां प्रश्नानाम् उत्तरम् एकपदेन लिखत -

- (क) अस्माकं देशस्य नाम किम् ?
- (ख) भारतवर्षं हिमालयस्य (हिमाद्रेः) कस्यां दिशायां वर्तते ?
- (ग) भारतस्य दक्षिणदिशायां कः सागरः वर्तते ?
- (घ) वेदानाम् आविर्भावः कस्मिन् प्रदेशे जातः ?
- (ङ) 'शिल्पदिकारम्' इति कस्याः भाषायाः महाकाव्यम् ?
- (च) कस्मात् कारणात् प्रकृतेः प्रदूषणं पापं मन्यते स्म ?
- (छ) आकाशपिण्डानि कैः अधीयन्ते स्म ?
- (ज) गणितशास्त्रे शून्यस्य कल्पना केन कृता ?

#### 5. समुचितं मेलनं कुरुत -

- |                           |   |                            |
|---------------------------|---|----------------------------|
| (क) वेदाः                 | - | 1. तमिलमहाकाव्यम्          |
| (ख) भारतवर्षम्            | - | 2. भारतवर्षे               |
| (ग) शिल्पदिकारम्          | - | 3. ऋक्-यजुः - साम - अथर्व  |
| (घ) शून्यस्य कल्पना       | - | 4. राष्ट्रम्               |
| (ङ) सी. वी. रमणः          | - | 5. दार्शनिकः               |
| (च) श्री अरविन्दः         | - | 6. वैज्ञानिकः              |
| (छ) सर्वशिक्षाभियानम्     | - | 7. स्थितप्रज्ञः            |
| (ज) श्रीराजेन्द्र प्रसादः | - | 8. शैक्षिकोत्थानकार्यक्रमः |

#### 6. कोष्ठकात् पदं चित्वा रिक्तस्थानानि पूरयत -

- (क) भारतवर्ष हिमालयस्य ..... दिशायां वर्तते । (उत्तर, दक्षिण)
- (ख) ..... निवासी प्रायेण बदरीकेदारयात्रां करोति । (उत्तरस्य/ दक्षिणस्य)
- (ग) भारतस्य गौरवं ..... काले किञ्चित् तिरोहितम् । (प्राचीने, मध्ये)
- (घ) डॉ. होमी जहाँगीर भाभा एकः ..... आसीत् । (वैज्ञानिकः / राजनीतिज्ञः)
- (ङ) सम्प्रति राष्ट्रस्य विकासः ..... । (सार्वत्रिकः / एकाङ्गिकः)

#### 7. निम्नलिखितानां प्रश्नानाम् उत्तरं पूर्णवाक्येन लिखत -

- (क) अस्माकं देशः किं कथ्यते ?
- (ख) वेदानाम् आविर्भावः कस्मिन् प्रदेशे जातः ?
- (ग) वेदेषु किम् अद्भुतम् आसीत् ?
- (घ) कां प्रति भारतीयानाम् आश्चर्यकरम् आकर्षणमासीत् ?
- (ङ) भारतवर्षे के विशालानि मन्दिराणि निर्मान्ति स्म ?
- (च) गणितशास्त्रे शून्यस्य कल्पना केन कृता ?

#### 8. निम्नलिखितानां पदानां बहुवचनं लिखत -

- (क) कथ्यते .....
- (ख) आसीत् .....
- (ग) वर्धितवान् .....
- (घ) करोति .....
- (ङ) इच्छति .....

- (च) मन्यते .....
- (छ) अधीयते .....
- (ज) गतः .....
- (झ) दर्शयति .....
- (ञ) सदृशः .....
- (ट) वर्तते .....

#### 9. संस्कृते अनुवादं कुरुत -

- (क) हमारा देश 'भारतवर्ष' कहा जाता है।
- (ख) यहीं (अत्रैव) सप्तसैन्धव क्षेत्र में वेदों की उत्पत्ति हुई।
- (ग) दक्षिण के निवासी प्रायः बद्रीकेदारनाथ की यात्रा करते हैं।
- (घ) उत्तर के निवासी रामेश्वर और कन्याकुमारी की यात्रा पर जाना चाहते हैं।
- (ङ) इस देश के पर्वत पवित्र कहे जाते हैं।
- (च) इस देश में वृक्ष पूजे जाते हैं।

#### 10. पदानि योजयित्वा लिखत -

- (क) भारतवर्षम् + इति = .....
- (ख) देशभागम् + अपि = .....
- (ग) गन्तुम् + इच्छति = .....
- (घ) आकर्षणम् + आसीत् = .....
- (ङ) चिकित्साशास्त्रम् + अपि = .....

#### 11. भिन्नप्रकृतिकं पदं चिनुत -

- (क) कथ्यते, नीयते, मन्यते, अमन्यत, क्रियते ।  
 (ख) देशः, ग्रन्थः, तीर्थयात्रिकः, जनः, लता ।  
 (ग) उत्तरम्, दक्षिणम्, भारतवर्षम्, वृक्षः, प्रदूषणम् ।  
 (घ) कन्या, कुमारी, नदी, विज्ञानम्, समस्या ।

## 12. अधोलिखितपदेषु प्रकृति-प्रत्ययविभागं कुरुत -

| यथा - पदानि   | प्रकृतिः | प्रत्ययः |
|---------------|----------|----------|
| कथयितुम्      | कथ् +    | तुमुन्   |
| (क) पठितुम्   | ..... +  | .....    |
| (ख) गन्तुम्   | ..... +  | .....    |
| (ग) हसितुम्   | ..... +  | .....    |
| (घ) द्रष्टुम् | ..... +  | .....    |
| (ङ) कर्तुम्   | ..... +  | .....    |

## 13. विशेष्य - विशेषणयोः उचितं मेलनं कुरुत -

| विशेष्य - पदानि | विशेषण - पदानि |
|-----------------|----------------|
| (क) चिन्तनम्    | 1. पवित्राः    |
| (ख) नद्यः       | 2. महती        |
| (ग) पर्वताः     | 3. नवीनाः      |
| (घ) प्रतिष्ठा   | 4. पुण्यतोयाः  |
| (ङ) प्रयोगाः    | 5. अद्भुतम्    |

**योग्यता-विस्तार**



भारतवर्ष का नाम प्राचीन राजा भरत (दुष्यन्त और शकुन्तला के पुत्र) के नाम पर पड़ा है। वैदिक युग में भरत एक कबीले (समुदाय) का नाम था। ऋग्वेद में उसकी चर्चा अनेक बार हुई है। भरत नाम के अनेक व्यक्ति पुराणों में हैं किन्तु हमारे देश का नाम **भारत** दुष्यन्तपुत्र के कारण ही पड़ा। अंग्रेजी में इसे (India) कहते हैं जो यूनानी शब्द से निकला है। प्राचीन काल में यूनानी लेखक सिन्धु नदी के आसपास के क्षेत्र को 'इन्दुस्' कहते थे, वही आगे चलकर नदीवाचक नाम से देशवाचक नाम हो गया, जैसे संस्कृत साहित्य में राजा के नाम से देश का नाम पड़ गया। शब्दों का अर्थ कालक्रम से बदलता है, यह स्वाभाविक है।

इस पाठ के आरम्भ में जो श्लोक दिया गया है वह विष्णु पुराण का है। विष्णु पुराण तथा भागवत पुराण में भारतवर्ष की महिमा विस्तार से कही गयी है। विष्णु पुराण में एक अन्य श्लोक है -

गायन्ति देवाः किल गीतकानि, धन्यास्तु ते भारतभूमिभागे ।

स्वर्गापवर्गास्पदमार्गभूते, भवन्ति भूयः पुरुषाः सुरत्वात् ॥

भारत की ऐसी महत्ता थी कि देवता भी यहाँ जन्म लेने के लिए तरसते थे। यहाँ जलवायु का वैविध्य, प्रदेशों की भिन्नता, पेड़-पौधों का आधिक्य, जल की सुविधा, उर्वरभूमि इत्यादि प्राकृतिक उपादानों का वरदान जम कर मिला है। यही कारण है कि इस देश में भौतिक समृद्धि तथा सारस्वत कार्य के लिए सर्वथा अनुकूल वातावरण मिला। यहाँ के प्राचीन विद्वानों में एक ओर भौतिक विज्ञान के निरीक्षण एवं विकास की क्षमता थी तो दूसरी ओर आध्यात्मिक चिन्तन का उत्कर्ष भी था। विदेशियों की दृष्टि भारत की अपार प्राकृतिक सम्पदा पर आरम्भ से ही लगी रही थी जिसके कारण यह देश हजारों वर्षों तक राजनीतिक दासता झेलता रहा।

आज स्वाधीन भारत में देश के समक्ष अनेक समस्याएँ हैं जिनका समाधान बहुत दूर तक नागरिकों के शुद्ध आचरण, ज्ञान के प्रति अभिरुचि एवं मिलजुल कर रहने से हो सकता है।

QQQ

चतुर्थः पाठः

## प्रहेलिकाः

( सन्धि )

(बालकों के बौद्धिक विकास के लिए गणित के समान प्रहेलिकाओं का बहुत महत्वपूर्ण स्थान है । पाठ्यपुस्तकों में प्रहेलिकाओं का समावेश अत्याधुनिक समय में होने लगा है । इनमें कुछ समस्याएँ दी जाती हैं जिनका समाधान छात्र-छात्राएँ अपनी बुद्धि को लगाकर करते हैं । यह कार्य समुचित बौद्धिक व्यायाम करा देता है । अन्य भाषाओं के समान संस्कृत में प्राचीन काल से ही विभिन्न रूपों की प्रहेलिकाएँ प्रचलित रही हैं । कुछ प्रहेलिकाएँ तो टीकाओं के बिना समझ में नहीं आतीं किन्तु अपेक्षाकृत सरल होती हैं । प्रस्तुत पाठ में ऐसी पाँच प्रहेलिकाएँ दी गयी हैं ।)



1. एक आदो वक्रोऽन्ते वाल्मीकिर्वैश्य गायकः ।

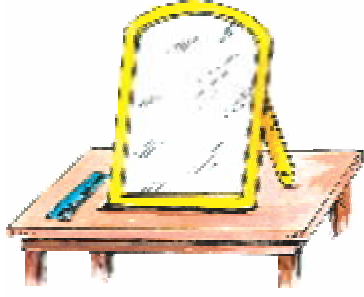
सर्वश्रेष्ठं यस्य राज्यं वद कोऽसौ जनप्रियः ॥

2. मेघश्यामोऽस्मि न कृष्णो, महाकायो न पर्वतः ।

बलिष्ठोऽस्मि न भीमोऽस्मि, कोऽस्म्यहं नासिकाकरः ॥

3. चक्री त्रिशूली न हरो न विष्णुः, महान् बलिष्ठो न च भीमसेनः ।

स्वच्छन्दगामी न च नारदोऽपि, सीतावियोगी न च रामचन्द्रः ॥



4. दन्तैर्हीनः शिलाभक्षी निर्जीवो बहुभाषकः ।  
गुणस्यूतिसमृद्धोऽपि परपादेन गच्छति ॥
5. स्वच्छाच्छवदनं लोकाः द्रष्टुमिच्छन्ति मे यदा ।  
तत्रात्मानं हि पश्यन्ति खिन्नं, भद्रं यथायथम् ॥  
(उत्तराणि – रामः, गजः, वृषभः, उपानह, दर्पणम्)

शब्दार्थः

रेफ = रकार

आदौ = शुरू में

मकारोऽन्ते (मकारः + अन्ते) = मकार अन्त में हो

गायकः = गवैया, गानेवाला

सर्वश्रेष्ठम् = सबसे अच्छा

वद = बोलो

कोऽसौ (कः + असौ) = कौन वह

जनप्रियः = लोकप्रिय

|                                 |   |                                                           |
|---------------------------------|---|-----------------------------------------------------------|
| मेघश्यामः                       | = | बादल की तरह साँवला                                        |
| कृष्णः                          | = | श्रीकृष्ण                                                 |
| महाकायः                         | = | विशाल शरीर वाला                                           |
| बलिष्ठोऽस्मि (बलिष्ठः + अस्मि)  | = | बलवान हूँ                                                 |
| भीमोऽस्मि (भीमः + अस्मि)        | = | भीम (पाण्डवों में से एक) हूँ, भयंकर हूँ।                  |
| कोऽस्म्यहम् (कः + अस्मि + अहम्) | = | कौन हूँ मैं                                               |
| नासिकाकरः                       | = | नाक रूपी हाथ वाला (कर= हाथ, सूँड़) जिसकी सूँड़ में नाक हो |
| चक्री                           | = | चक्रधारी, चक्र की छाप वाला                                |
| त्रिशूली                        | = | त्रिशूलधारी, त्रिशूल की छाप वाला                          |
| हरो ( हरः )                     | = | शिव                                                       |
| स्वच्छन्दगामी                   | = | स्वतन्त्र रूप से भ्रमण करने वाला                          |
| सीतावियोगी                      | = | हल से अलग, सीता से अलग                                    |
| नारदः                           | = | देवर्षि, ब्रह्मा जी के पुत्र (जो हमेशा घूमते रहते हैं)    |
| दन्तैर्हीनः (दन्तैः + हीनः)     | = | दाँतों से रहित                                            |
| शिलाभक्षी                       | = | चट्टानों को खाने वाला, उनसे अप्रभावित                     |
| निर्जीवः                        | = | प्राणरहित                                                 |
| बहुभाषकः                        | = | बहुत बोलने वाला                                           |
| गुणस्यूतिसमृद्धः                | = | धागों (गुण) की सिलाई से युक्त                             |

परपादेन = दूसरों के पैर से

स्वच्छाच्छवदनम् (स्वच्छ + अच्छवदनम्) = साफ व अच्छा मुख

द्रष्टुमिच्छन्ति (द्रष्टुम् + इच्छन्ति) = देखना चाहते हैं

आत्मानम् = अपने को

खिन्नम् = दुःखी / उदास

भद्रम् = अच्छा

यथायथम् = जैसा हो वैसा

### सन्धिविच्छेदः

मकारोऽन्ते = मकारः + अन्ते (विसर्ग - सन्धिः)

वाल्मीकिर्यस्य = वाल्मीकिः + यस्य (विसर्ग - सन्धिः)

कोऽसौ = कः + असौ (विसर्ग - सन्धिः)

मेघश्यामोऽस्मि = मेघश्यामः + अस्मि (विसर्ग - सन्धिः)

बलिष्ठोऽस्मि = बलिष्ठः + अस्मि (विसर्ग - सन्धिः)

भीमोऽस्मि = भीमः + अस्मि (विसर्ग - सन्धिः)

कोऽस्म्यहम् = कः + अस्मि + अहम् (विसर्ग - सन्धिः, यण् सन्धिः)

दन्तैर्हीनः = दन्तैः + हीनः (विसर्ग - सन्धिः)

गुणस्यूतिसमृद्धोऽपि = गुणस्यूतिसमृद्धः + अपि (विसर्ग - सन्धिः)

स्वच्छाच्छवदनम् = स्वच्छ + अच्छवदनम् (दीर्घ-सन्धिः)

नारदोऽपि = नारदः + अपि (विसर्ग - सन्धिः)

### प्रकृति-प्रत्यय-विभागः

|           |   |                      |                                   |
|-----------|---|----------------------|-----------------------------------|
| वद        | = | $\sqrt{\text{वद्}}$  | , लोट्लकारः, मध्यमपुरुषः, एकवचनम् |
| रुदन्ति   | = | $\sqrt{\text{रुद्}}$ | , लट्लकारः, प्रथमपुरुषः, बहुवचनम् |
| गच्छति    | = | $\sqrt{\text{गम्}}$  | , लट्लकारः, प्रथमपुरुषः, एकवचनम्  |
| द्रष्टुम् | = | $\sqrt{\text{दृश्}}$ | + तुमुन्                          |
| इच्छन्ति  | = | $\sqrt{\text{इष्}}$  | , लट्लकारः, प्रथमपुरुषः, बहुवचनम् |
| पश्यन्ति  | = | $\sqrt{\text{दृश्}}$ | , लट्लकारः, प्रथमपुरुषः, बहुवचनम् |

### अभ्यासः

#### मौखिकः

#### 1. निम्नलिखितानां पदानाम् उच्चारणं कुरुत -

मकारोऽन्ते, कोऽसौ, बलिष्ठोऽस्मि, भीमोऽस्मि, दन्तैर्हीनः, गुणस्यूतिसमृद्धः, स्वच्छाच्छवदनम्, द्रष्टुमिच्छन्ति, स्वच्छन्दगामी, नारदोऽपि ।

#### 2. मातृभाषायाम् एकां प्रहेलिकां वदत ।

#### 3. निम्नलिखितानां पदानां द्विवचनं वदत -

इच्छति, पश्यति, वदसि, आगच्छामि, गच्छति, भवति ।

#### लिखितः

#### 4. अधोलिखितानां प्रश्नानाम् उत्तरम् एकपदेन लिखत -

(क) कः पशुः नासिकया शाखां त्रोटयति ?

- (ख) जनाः कस्मिन् स्वमुखं पश्यन्ति ?
- (ग) जनाः पादयोः किं धारयन्ति ?
- (घ) भीमसेनः कीदृशः आसीत् ?
- (ङ) कः महाकायः अत्र वर्णितः ?
- (च) कः जनप्रियः ?

**5. अधोलिखितानां प्रश्नानाम् उत्तरम् पूर्णवाक्येन लिखत -**

- (क) कस्य राज्यं सर्वश्रेष्ठम् ?
- (ख) श्रीरामचन्द्रस्य पत्नी का आसीत् ?
- (ग) गजात् भिन्नः कः मेघवत् श्यामः अस्ति ?
- (घ) पादरक्षकः केषां भक्षणं करोति ?
- (ङ) लोकाः दर्पणे आत्मानं कथं पश्यन्ति ?
- (च) वाल्मीकिः कस्य गायकः ?

**6. अधोलिखितानां पदानां सन्धिं कुरुत -**

- (क) वाल्मीकिः + यस्य = .....
- (ख) भीमः + अस्मि = .....
- (ग) कः + असौ = .....
- (घ) दन्तैः + हीनः = .....
- (ङ) मकारः + अन्ते = .....
- (च) कः + असौ = .....
- (छ) नारदः + अपि = .....

**7. मञ्जूषायाः उचितपदानि चित्वा वाक्यानि पूरयत -**

निर्जीवो, सीतावियोगी, पर्वतः, पश्यन्ति, कृष्णो, गायकः, विष्णुः

(क) महाकायो न ..... ।

(ख) दन्तैर्हीनः शिलाभक्षी ..... बहुभाषकः ।

(ग) ..... न च रामचन्द्रः ।

(घ) मेघश्यामोऽस्मि नो ..... ।

(ङ) तत्रात्मानं हि ..... खिन्नम् ।

(च) वाल्मीकिर्यस्य ..... ।

(छ) चक्री त्रिशूली न हरो न ..... ।

#### 8. अधोलिखितपदानां बहुवचनं लिखत -

|      | एकवचनम्  |   | बहुवचनम् |
|------|----------|---|----------|
| यथा- | चलति     | = | चलन्ति   |
| (क)  | गच्छति   | = | .....    |
| (ख)  | पश्यति   | = | .....    |
| (ग)  | वदामि    | = | .....    |
| (घ)  | भवसि     | = | .....    |
| (ङ)  | तिष्ठामि | = | .....    |
| (च)  | इच्छति   | = | .....    |
| (छ)  | नमामि    | = | .....    |

#### 9. विपरीतार्थकशब्दयोः सुमेलनं कुरुत -



| अ            |   | आ            |
|--------------|---|--------------|
| (क) खिन्नः   | - | 1. अन्तः     |
| (ख) निर्जीवः | - | 2. हसन्ति    |
| (ग) रुदन्ति  | - | 3. प्रसन्नः  |
| (घ) आदिः     | - | 4. सजीवः     |
| (ङ) कृष्णः   | - | 5. अल्पभाषकः |
| (च) बहुभाषकः | - | 6. धवलः      |

#### 10. अधोलिखितानां शब्दानां लोट्लकारे रूपं लिखत -

|             | लट्लकारः | लोट्लकारः |
|-------------|----------|-----------|
| यथा -       | पठति     | पठतु      |
| (क) पश्यति  | -        | .....     |
| (ख) गच्छतः  | -        | .....     |
| (ग) वदति    | -        | .....     |
| (घ) भवन्ति  | -        | .....     |
| (ङ) तिष्ठति | -        | .....     |
| (च) अस्ति   | -        | .....     |
| (छ) ददाति   | -        | .....     |
| (ज) हससि    | -        | .....     |

11. पुस्तकम् - लता वस्त्रम् - रणधीरः

|       |   |          |             |   |        |
|-------|---|----------|-------------|---|--------|
| लेखनी | - | रुष्णा   | उपनेत्रम्   | - | मुकेशः |
| गृहम् | - | शुभाङ्गी | आम्नाणि     | - |        |
| घटी   | - | बबीता    | अङ्गुलीयकम् | - | ललिताः |
|       |   |          | घटः         | - | मनोजः  |

मञ्जूषायां केषाञ्चित् वस्तूनां नामानि सन्ति । पार्श्वे तेषां स्वामिनः अपि निर्दिष्टाः। उदाहरणानुसारं किं कस्य इति निर्दिशत।

- यथा -
1. एषा कर्तरी रघुवीरस्य ।
  2. .... पुस्तकम् ..... ।
  3. .... लेखनी ..... ।
  4. .... गृहम् ..... ।
  5. .... घटी ..... ।
  6. .... वस्त्रम् ..... ।
  7. .... उपनेत्रम् ..... ।
  8. .... आम्नाणि ..... ।
  9. .... अङ्गुलीयकम् ..... ।
  10. .... घटः ..... ।

### योग्यता-विस्तारः

**प्रत्याहार** - व्याकरण शास्त्र में अक्षरों या प्रत्ययों की सूची को समेटने वाले शब्दों को 'प्रत्याहार' कहते हैं। संक्षेपण की यह प्रक्रिया अत्यन्त प्राचीन है। आचार्य पाणिनि के चौदह सूत्रों के आधार पर वर्णसंबन्धी प्रत्याहार की रचना की जाती है जिसमें दो वर्ण होते हैं। प्रथम वर्ण पूरा वर्ण होता है जबकि दूसरा वर्ण उन चौदह सूत्रों में से किसी के अन्तिम वर्ण के रूप में अर्थात् 'हल्' होता है। प्रत्याहारों को समझने के लिए पहले

पाणिनि के चौदह सूत्रों को स्मरण रखना आवश्यक है । इन्हें ‘प्रत्याहार सूत्र’ भी कहते हैं –

- |             |                |          |
|-------------|----------------|----------|
| 1. अइउण्    | 2. ऋलृक्       | 3. एओङ्  |
| 4. ऐऔच्     | 5. हयवरट्      | 6. लण्   |
| 7. जमङणनम्  | 8. झभञ्        | 9. घढधष् |
| 10. जबगडदश् | 11. खफछठथचटतव् | 12. कपय् |
| 13. शषसर्   | 14. हल्        |          |

इनसे अक्, अच्, इक्, यण् इत्यादि प्रत्याहार बनते हैं । अक् से निम्नलिखित वर्णों का ग्रहण होता है – अ, इ, उ, ऋ, लृ । इसी प्रकार अच् कहने से अ से लेकर औ तक सभी स्वरवर्ण आ जाते हैं । ध्यान रहे कि हल् वर्णों को प्रत्याहार के भीतर नहीं लिया जाता । कुछ अन्य उदाहरण – इक् = इ उ ऋ लृ ।

यण् = य् व् र् ल् । जश् = ज् ब् ग् ड् द् ।

प्रत्याहारों को बहुत वैज्ञानिक ढंग से सजाया गया है । इन्हें हम आगे चलकर समझेंगे । स्मरणीय है कि ‘अच्’ कहने से केवल स्वरवर्णों का और ‘हल्’ कहने से सभी व्यञ्जनों का बोध हो जाता है । पाणिनि ने अपने व्याकरण में इन सूत्रों के आधार पर 42 प्रत्याहारों का प्रयोग किया है ।

प्रत्ययों से भी प्रत्याहार बनते हैं जैसे सुप् = प्रातिपदिक से लगने वाले सभी प्रत्यय (सु से लेकर प् तक) । तिङ् = धातु से लगने वाले वे प्रत्यय जो ति से लेकर ङ् तक (कुल 18) हैं । सुट् आदि प्रत्याहार भी हैं ।